International Journal of Applied Research 2015; 1(9): 104-107

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(9): 104-107
www.allresearchjournal.com
Received: 21-06-2015
Accepted: 24-07-2015

हरेन्द्र नरियाल
शोध-छात्र दिल्ली विश्वविद्यालय

Correspondence:
हरेन्द्र नरियाल
शोध-छात्र दिल्ली विश्वविद्यालय

हर्षदेवमाधव के मृत्युशतकम् में बिम्ब-विधान

हरेन्द्र नरियाल

काव्य भाषा बिम्बों की भाषा है | काव्य में बिम्ब की प्रक्रिया भाषा और भावों के प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया है| बिम्ब की महत्ता को काव्य में सभी विचारक एवं समीक्षक स्वीकारते है |बिम्ब रचना काव्य को चमत्कृत एवं सौन्दर्य संपन्न बनाती है | अमूर्त का मूर्तिकरण ही बिम्ब है | मृत्युशतकम् हर्षदेवमाधवकृत काव्य रचना है |इस शतक काव्य की प्रत्येक रचना मृत्यु के विषय में अपना अलग सन्दर्भ प्रस्तुत करती है | ये शताधिक काव्य एक सामान्य विषय पर अपनी–अपनी विशिष्ट दृष्टि रखती है है | मृत्युशतकम् में चाहे छन्द हो, वर्ण्य हो अथवा वर्णन शैली हो, वह सभी दृष्टियों से सर्वथा नवनवायमान है | इसका वर्ण्य आश्चर्यजनक रूप से अपूर्व है | मृत्युशतकम् के बिम्बों का अध्ययन आचार्य की कृति वगीश्वरीकंठसूत्रम् में किये गए बिम्ब –वर्गीकरण को आधार बनाकर ही किया जा रहा है | उन्हें छह प्रकार के बिम्ब अभिमत है | इसी क्रम में मृत्युशतकम् के बिम्बों का अध्ययन प्रस्तुत है | सर्वप्रथम चाक्षुष बिम्बों को प्रस्तुत किया जा रहा है |

चाक्षुष. बिम्ब :
चाक्षुष-बिम्ब सर्वाधिक इन्द्रियग्राह्य होता है | अतः यही कारण है कि किसी भी काव्य में चाक्षुष-बिम्ब बहुलता से प्राप्त होते है | प्रकृत काव्य में चाक्षुष-बिम्बों का बाहुल्य है | यथा :

'दीपो निमीलितो गवाक्षे'

यहाँ पर कवि ने मृत्यु को गवाक्ष में रखे हुए दीपक के बुझने के रूप में चक्षुसंवेद्य आकृति प्रदान कर सुन्दर बिम्ब विन्यास किया है | इसी वर्णन में एक अन्य चाक्षुष-बिम्ब प्रस्तुत है|

'विमृष्टं श्यामवर्णेन जीवितमिन्द्रधनुः'

यहाँ पर जीवन जो एक अमूर्त सत्ता है उसे सप्तवर्णात्मक इंद्रधनुषके रूप में मूर्त कर दिया है और श्यामवर्णरूप मृत्यु द्वारा उसे आवृत करना | वर्ण अर्थात् रंग भी चाक्षुष संवेदन का विषय है | अतःयहाँ पर मृत्यु को 'काले रंग ने पोंछ दिया मेरे सप्तरंगी जीवन इन्द्रधनुष को 'के रूप में नेत्रेन्द्रिय द्वारा ग्राह्य स्वरुप प्रदान किया गया है | यहाँ पर कवि द्वारा एक सुन्दर एवं स्पष्ट चाक्षुष-बिम्ब की उद्भावना की गयी है |इसी प्रकार अधोलिखित पंक्तियाँ भी चाक्षुष-बिम्ब को ही उद्धृत कर रही है :-

तवकमल गौरकरात्,
बंगुरिकाकाचशकलोभूत्वा भष्टोऽस्मि
तवभालदेशे रिक्तता में प्रसृताऽस्ति ||

आचार्य हर्षदेवमाधव ने प्रस्तुत मुक्तक में स्त्री के जिस श्रृंगार से उसके स्वामी के अस्तित्व की पहचान होती है और जिसके अभाव में उसके स्वामी के अस्तित्व पर संशय होता है |यहाँ पर कवि ने मृत्यु को

'कोमलकमलसदृशगौर हाथों से चूडियों का टूटना एवं ललाट की रिक्तता ' के रूप में चक्षूरिन्द्रिय द्वारा ग्राह्य स्वरुप प्रदान किया है | जो स्पष्टता से चाक्षुष. बिम्ब को उपस्थित करता है | इस काव्य में कवि मृत्यु को भय में प्रस्तुत कर रहा है :-

मृत्युरागच्छति,
श्रीमते त्वयाकरनिरीक्षकरुपेण,
सुरमत्ताय रक्षकदण्डरुपेण,
कर्मचारिणे कार्यालयाधिकारी भूत्वा,
अकिञ्चनाय मूल्यवृद्धिरुपेण,
मंत्रिणेनिर्वाचनपराजयरुपेण,
किन्तु, मृत्यो ! अहं तु भक्तोऽस्मि.....|

इस मुक्तक में मृत्यु की अप्रियता अथवा भयरूपता को अनेक चाक्षुष. बिम्बों के माध्यम से उत्कीर्ण किया गया है | साथ ही भक्त जो सर्वत्र समदर्शी होता है | प्रियाप्रिय-निक्षेप होता है | उसकी मृत्यु से अभितता को भी किन्तु पद के द्वारा प्रतीत होने वाले उक्त बिम्बों के वैलक्षण्य द्वारा मुखरित किया गया है | उक्त काव्य भी चाक्षुष. बिम्ब को ही निर्देशित कर रहा है:-

वर्तमानपत्रस्य,
रिक्तस्थानपूर्त्यै मृत्युर्यथा ऽऽगच्छति,
तथैव गृहस्य सर्वपूर्णकक्षेषु
कक्षमेकं रिक्तं कर्तुमपि ||

मृत्यु जहाँ किसी रिक्त को पूर्ण करती है वहीं किसी भरे हुए को रिक्त भी करती है |प्रतीत होता है कि मृत्यु की ये दोनों ही भूमिकायें आवश्यक है | इस परस्पर विरोधी तथा एक – दूसरे पर निर्भर मृत्यु वैशिष्ट्य को संभवतः उक्त चाक्षुष-बिम्ब योजना के आभाव में इतनी कुशलता एवं सहजता से कहा जाना संभव ना था | कवि ने अग्रिम काव्य में मृत्यु की कष्टप्रद प्रक्रिया को एक चाक्षुष-बिम्ब के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया है :_

मृत्युरर्थात्
मीनस्य जलाद् बहिः क्षेपः||

इस कविता में मृत्यु की कष्टप्रद प्रक्रिया को कवि ने एक ही चाक्षुष-बिम्ब से बड़े सशक्त रूप में उपस्थापित कर दिया है | 'वह है मछली को जल से बाहर फेंका जाना ' अग्रिम काव्य में कवि गंगा को निर्देशित करते हुए प्रबल चाक्षुष-बिम्ब का विन्यास कर रहा है :-

मुखे गंगाजलबिंदु, आमस्तकात्
पादनखपर्यन्तं अस्तित्वं मे,
गंगा प्रवाहायते ||

प्रस्तुत रचना में कविवर माधव ने व्यक्ति की मृमाणता को 'गंगा प्रवाहायते' से मूर्त कर दिया है | अतः यह एक समर्थ बिम्ब-प्रयोग है | कवि यहाँ व्यत्ति के अस्तित्व की विलीयमानता को एक स्पष्ट चाक्षुष आकार प्रदान कर रहा है | अग्रिम काव्य में चाक्षुष-बिम्ब के प्रयोग के लिए सांख्यदर्शन की दार्शनिक विचारधारा को कवि ने उपस्थापित किया है :-

मृत्युः पुरुषाय
प्रकृतेः द्वितीय स्तनः||

कहने की आवश्यकता नहीं कियहाँ मृत्यु को एक दृश्य रूप प्रदान किया गया है | अतः यहाँ चाक्षुष-बिम्ब है | प्रत्युत् इस बिम्ब के माध्यम से कवि ने अत्यंत स्पष्टता एवं शक्तिमता के साथ यह अभिव्यक्ति कर डाला है कि जीवन की भाँति मृत्यु भी प्रकृति का ही एक धर्म तथा प्रकृति से अविविक्त पुरुष जीवन के साथ मृत्यु का भोग करने को भी विवश है | हर्षदेवमाधव के प्रकृत शतक में बिम्ब के द्वारा सांख्य-दर्शनकी प्रकृति – पुरूष सम्बद्ध अवधारणा को भी मूर्तता प्रदान की गई | इसी प्रकार प्रकृत शतक में 'प्राचीन आख्यान साहित्य ' का ही अनेक स्थानों पर चाक्षुषादि बिम्बों का संयोजन कर मृत्यु विषयक चिंतन को प्रकट किया है :-

मम जङ्घायां गदा प्रहार :,
उरसि इन्द्रेण कर्णाय प्रदत्ता शक्ति :,
मस्तके ब्रह्मास्त्रव्रण:,
वक्षसि भीमा श्लेशपीड़ा,
महाभारतमष्टादश दिवसानाम् न, किन्तु
अष्टादश क्षणानाम् अथवा अष्टादशक्षणांशानामपि स्यात् |

प्रकृत रचना में कवि ने असह्य पीडाओंको (जो पीड़ा वास्तव में नहीं होनी चाहिए थी)अर्थात् मृत्यु के समग्र कष्ट को महाभारत के विभिन्न दृष्टान्तों के माध्यम से चक्षूरिन्द्रिय ग्राह्य स्वरुप प्रदान कर एक सुन्दर एवं समर्थ उदाहरण प्रस्तुत किया है | जो चाक्षुष. बिम्ब को निर्देशित करता है | अधोलिखित कविता में श्लेषानुप्राणित चाक्षुष. बिम्ब की छटा सविशेष दृष्टव्य है : -

कालयवनभयात् माधवौ द्वौ पलायितौ |
प्रथम: माधवो वासुदेव :, अधुना
माधवो हर्षदेव : ||

यहाँ पर यम के भय से कवि हर्षदेवमाधव के भागने को द्वापर में कालयवन नामक राक्षस के भय से माधव (श्रीकृष्ण) के भागने के रूप में चक्षूरिन्द्रिय का विषय बना दिया है | अत : इसी प्रकार मृत्युशतकम् के अनेक स्थलों पर चाक्षुष. बिम्ब हमें प्राप्त होते है | चाक्षुष. बिम्बों पर दृष्टिपात करने के पश्चात् अब स्पर्श्य-बिम्बों को उपस्थापित किया जा रहा है |

स्पर्श्य-बिम्ब:

मृत्युशतकम् में चाक्षुष. बिम्बों के उपरान्त, संवेदना की दृष्टि से स्पर्शिक बिम्बों का स्थान महत्त्वपूर्ण है | अत : स्पर्श्य- बिम्बों का दिग्दर्शन प्रस्तुत किया जा रहा है :-

मृत्यु : काचपात्रे,

उष्णजलधारा ||

इस काव्य में कवि ने काचपात्र को जीवन एवं उष्णजलधारा को मृत्यु के रूप में उपस्थापित किया है | काचपात्र उष्णजलधारा के स्पर्श से खंडित हो जाता है | अत: काच पात्र में उष्णजलधारा के रूप में मृत्यु को अब स्पेशन्द्रिय ग्राह्य स्वरुप प्रदान किया गया है | यद्यपि यहाँ जलधारा दृश्य है परन्तु यहाँ पर तात्पर्य उसके उष्णता से है |अत: यहाँ पर एक सुन्दर स्पर्श्य-बिम्ब दृष्टिगोचर होता है | स्पर्श्य-बिम्ब प्रकृत शतक मे मिश्रित रूप में बहुलता से मिलते है, परन्तु स्वतंत्र रूप में न्यून ही प्राप्य है |

श्राव्य-बिम्ब

हर्षदेवमाधव ने इन्द्रिय-संवेदन के आधार पर श्राव्य-बिम्ब को बिम्ब के तृतीय भेद के रूप में स्वीकार किया है | अत: प्रकृत शतक में श्राव्य-बिम्ब निम्न प्रकार से दृष्टव्य है –

मृत्यु बलपूर्वक पंचभूतात्मक शरीरयात्रा को समाप्त कर देती है | इस भाव को सम्प्रेषित करने के लिए कवि ने अधोलिखित पंक्तियों में विलक्षण प्रातिम कल्पना की है –

मृत्यु: गायति मल्हाररागम् |
शाम्यन्ति पंचदीपा: ||

यहाँ कवि के अनुसार मृत्यु (वृष्टि प्रेरक) मल्हार राग गा रही है तथा पाँच दीये बुझ रहे है | यहाँ कविता के प्रारंभिक भाग में मृत्यु की प्रवृति को चित्रित करने के लिए मल्हार राग रूपी श्राव्य-बिम्ब की योजना की गयी है | अत: स्पर्श्य-बिम्बों की भाँति श्राव्य-बिम्ब भी स्वतन्त्र रूप से न्यून ही प्राप्त होते है | परन्तु मिश्रित रूप से ये भी प्रकृत शतक में बहुलता से प्राप्य है |

आघ्रेय- बिम्ब:

मृत्युशतकम् में आघ्रेय- बिम्ब भी स्वतन्त्र रूप से प्राप्त होते है | अत: प्रकृत शतक में आघ्रेय- बिम्बो का निम्न प्रकार से निरूपण किया गया है:-

हे ! प्राणपतंगा: | गच्छन्तु
सुगंधस्य पुष्पेण सह सम्बन्धो नष्टोऽस्ति ||

इस कविता में शरीर से प्राणों के वियोग को पुष्प से सुगंध के सम्बन्ध-नाश के रूप में घ्राणेन्द्रिय गोचर बना दिया गया है | निश्चय ही यह आघ्रेय कोटिक बिम्ब है | अग्रिम कविता में भी कवि आघ्रेय- बिम्ब को ही निर्देशित कर रहा है :-

मृत्युनाम्न: श्यामकर्बुरहरिणस्य
नाभिपद्मे कोऽपि परिमलोऽस्ति
अहं तं घ्रात्वा सुगंधमूर्छितो गच्छामि वज्जुवनम् ||

प्रकृत रचना में कवि ने मृत्यु के आगमन पर व्यक्ति के मूर्छित हो जाने को मृत्यु नामक चितकबरे हिरण की नाभि में स्थित सुगंध को सूंघकर मूर्छितो होने के रूप में चित्रित किया गया है | अत: यह कविता आघ्रेय बिम्बमयी है | अत: प्रकृत शतक में इसी प्रकार के बिम्ब दृष्टिगत है |

रस्य- बिम्ब:

इन्द्रिय-संवेदना के आधार पर आचार्य हर्षदेवमाधव ने रस्य-बिम्ब को बिम्ब के पंचम भेद के रूप में स्वीकार किया है | अत: प्रकृत शतक के आधार पर रस्य-बिम्बों का अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है |

फलगर्भे कीटको भूत्वा
मां खादति मृत्यु: ||

प्रकृत शतक में कवि ने उत्पन्न शरीर में मृत्यु अन्तर्निहित है तथा वह प्नतिक्षण शरीर का क्षरण कर रही है | इस तथ्य को 'फल के गर्भ में स्थित कीट के द्वारा उसे खाए जाने के रूप में एक रस्य-बिम्ब से निरुपित किया गया है | मृत्युशतकम् में स्वतन्त्र रूप से चाक्षुष-बिम्बो की बहुलता है | अन्य सभी बिम्ब कविता में अधिकांश मिश्रित रूप में मिलते है |

मानस-बिम्ब:

बिम्ब के भेदों में मानस –बिम्ब भी अन्यतम है | अत: मानस बिम्ब के उदाहरण भी प्रकृत शतक में मिलते है | अत: अब मानस-बिम्बों का अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है : -

मृत्युरस्ति करुणामय: ||

आचार्य हर्षदेवमाधव ने इन पंक्तियोंमें मृत्यु को करुणामय कहकर उसे मनोगोचार स्वरुप प्रदान किया गया है | अत: यहाँ सुन्दर मानस-बिम्बों की योजना परिलक्षित होती है | इसी प्रकार अधोलिखित पंक्तियों के माध्यम से भी मानस बिम्ब को ही निर्देशित किया गया है –

मृत्युर्वर्षाकालोऽस्ति,
कोऽपि तं वाञ्छति चातको भूत्वा,
कोऽपि शुष्कक्षेत्रवत्तं प्रतिपालयति,
कोऽपि जुगुप्सते तस्मात्,
शूकरवत् | कोऽपि बलाद् गच्छति
नदीप्रवाहपतितमेषवत् |
कोऽपि तस्मिननागते तटवृक्षायते ||

प्रकृत रचना में मृत्यु को वर्षाकाल कहकर उसके प्रति पृथक् –पृथक् जनों की अलग-अलग प्रकार की भावनाओं को चातक के द्वारा चाहे जाने आदि के द्वारा अनेक प्रकार मनसंवेद्य बनाया गया है | अत: कह सकते है की मृत्युशतक सभी बिम्बों की दृष्टि से पूर्ण है |

उपसंहार :

हर्षदेवमाधवकृत मृत्युशतकम् में बिम्ब-विधान की दृष्टि से अध्ययन करने पर निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि कवि ने अपने काव्य में इस प्रकार के अर्थो को अपनी बिम्बात्मक प्रक्रिया रचना द्वारा वाणी दी है | अर्थात् मृत्यु जैसे विषय की समालोचना करने की चेष्टा की है | कवि को इन्द्रिय-संवेदना के आधार पर छह बिम्ब अभिमत है | कविवर माधव के

बिम्ब अनेक स्थानों पर उपमान के रूप में आये है | ऐसे स्थल कविता के चमत्कृतिपूर्ण अर्थ-संप्रेषण को अत्यंत सशक्त बना देते हैद्यकविकी पौराणिक,दार्शनिक,समसामयिक अभिज्ञता ने, प्रस्तुत शतक में उसके बिम्ब जगत को विराट आधार और आकार प्रदान किया है |